1195011 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 | 1950 |

संजय उवाच ततोब्रवीन्महाराजवार्णीय:कुरुनंदनं॥ रोचतेमेमहाप्राज्ञराजेंद्रतवभाषितं ॥ ५२ ॥ देवव्रतः रुतीभीष्मः प्रेक्षितेनापिनिर्देहेत् ॥ गम्यतांसव धोपायंत्रवृंसागरगासुतः॥५३॥वकुमईतिसत्यंसत्वयापृष्टोविशेषतः॥तेवयंत्र्यगच्छामःप्रष्टुंकुरुपितामहं॥५४॥गत्वाशांतनवंदहंमंत्रंपुच्छामभारत॥ सवोदास्यतिमंत्रंयंतेनयोत्स्यामहेपरान्॥ ५५॥ एवमामं त्यतेवीराःपांडवाःपांडुपूर्वजं॥जग्मुस्तेसहिताःसर्वेवासुदेवश्ववीर्यवान्॥५६॥ विमुक्तशसक्वचा भीष्मस्यसद्नंत्रति॥प्रविश्वचतदाभीष्मंशिरोभिःप्रणिपेदिरे॥५७॥पूजयंतोमहाराजपांडवाभरतर्षभं॥प्रणम्यशिरसाचैनंभीष्मंशरणमभ्ययुः॥५८॥ तानुवाचमहाबाहुभीष्मःकुरुपितामहः॥स्वागतंतववार्णोयस्वागतंतेधनंजय॥५९॥स्वागतंधर्मपुत्रायभीमाययमयोस्तदा॥किवाकार्यकरोम्यययुष्माकं त्रीतिवर्धनं॥६०॥सर्वात्मनापिकर्वास्मियद्पिस्यात्मुदुष्करं॥तथाबुवाणंगांगेयंत्रीतियुक्तंपुनःपुनः॥६१॥उवाचराजादीनात्मात्रीतियुक्तमिदंवचः॥क थंजयेमसर्वज्ञकथंराज्यंत्रभेमहि॥६२॥प्रजानांसंशयोनस्याकथंतन्मेवद्प्रभो॥भवान्हिनोवधोपायंत्रवीतुस्वयमात्मनः॥६३॥भवंतंसमरेवीरविषहे मकथंवयं॥ नहितेसूक्ष्ममप्यस्तिरंधंकुरुपितामह॥ ६४॥ मंडलेनैवधनुषादृश्यसेसंयुगेसदा॥ आददानंसंद्धानंविकर्षतंधनुर्नच॥ ६५॥ पश्यामस्वांमहावा होरथेसुर्यमिवापरं॥रथाश्वनरनागानांहंतारंपरवीरहन्॥६६कोथवोत्सहतेजेतुंत्वांपुमान्भरतर्षभ॥वर्षताश्ररवर्षाणिसंयुगेवैशसंकृतं॥६७॥क्षयंनीताहिष् तनासंयुगेमहतीमम ॥ यथायुधिजयेमत्वांयथाराज्यं ऋशंमम ॥ ६८ ॥ ममसैन्यस्य चक्षेमंतन्मेब्रूहिपितामह ॥ ततोब्रवीच्छांतनवः पांडवान्पांडुपूर्वजः ॥ ॥६९॥नकथंचनकौंतेयमयिजीवतिसंयुगे॥जयोभवतिसर्वज्ञसत्यमेतद्भवीमिते॥ ७०॥ निर्जितेमयियुद्धेनरणेजेष्यथपांडवाः॥क्षिप्रमियपाहरध्वंयदी च्छथरणेजयं॥ ७९ ॥ अनुजानामिवःपार्थाः प्रहरध्वंयथासुखं॥ एवंहिसुकृतंमन्येभवतांविदितोत्यहं ॥ ७२ ॥ हतेमियहतंसर्वतस्मादेवंविधीयतां॥ युधि ष्ठिरउवाच ब्रूहितस्मादुपायंनोयथायुद्धेजयेमहि॥ ७३॥ भवंतंसमरेकुद्धंढहस्तमिवांतकं ॥ शक्योवज्जधरोजेतुंवरुणोथयमस्तथा॥ ७४॥ नभवान्सम रेशक्यःसेंद्रैरिपसुरासुरेः॥ भीष्मउवाच सत्यमेतन्महावाहोयथावदसिपांडव॥ ७५॥ नाहंजेतुंरणेशक्यःसेंद्रैरिपसुरासुरेः॥ आत्तरास्नोरणेयत्तोगृहीत वरकार्मुकः॥ ७६॥ ततोमांन्यस्तरासंतुएतेहन्युर्महारथाः॥ निक्षिमशस्त्रेपतितेविमुक्तकवचध्वजे॥ ७७॥